[३६] श्री व्यवहार (छेद)सूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

“व्यवहार” मूलं

[मूलं एव]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर **(M.Com., M.Ed., Ph.D.)**

12/02/2015, गुरुवार, २०७१ महा कृष्ण ८

jain_e_library’s Net Publications

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [–]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

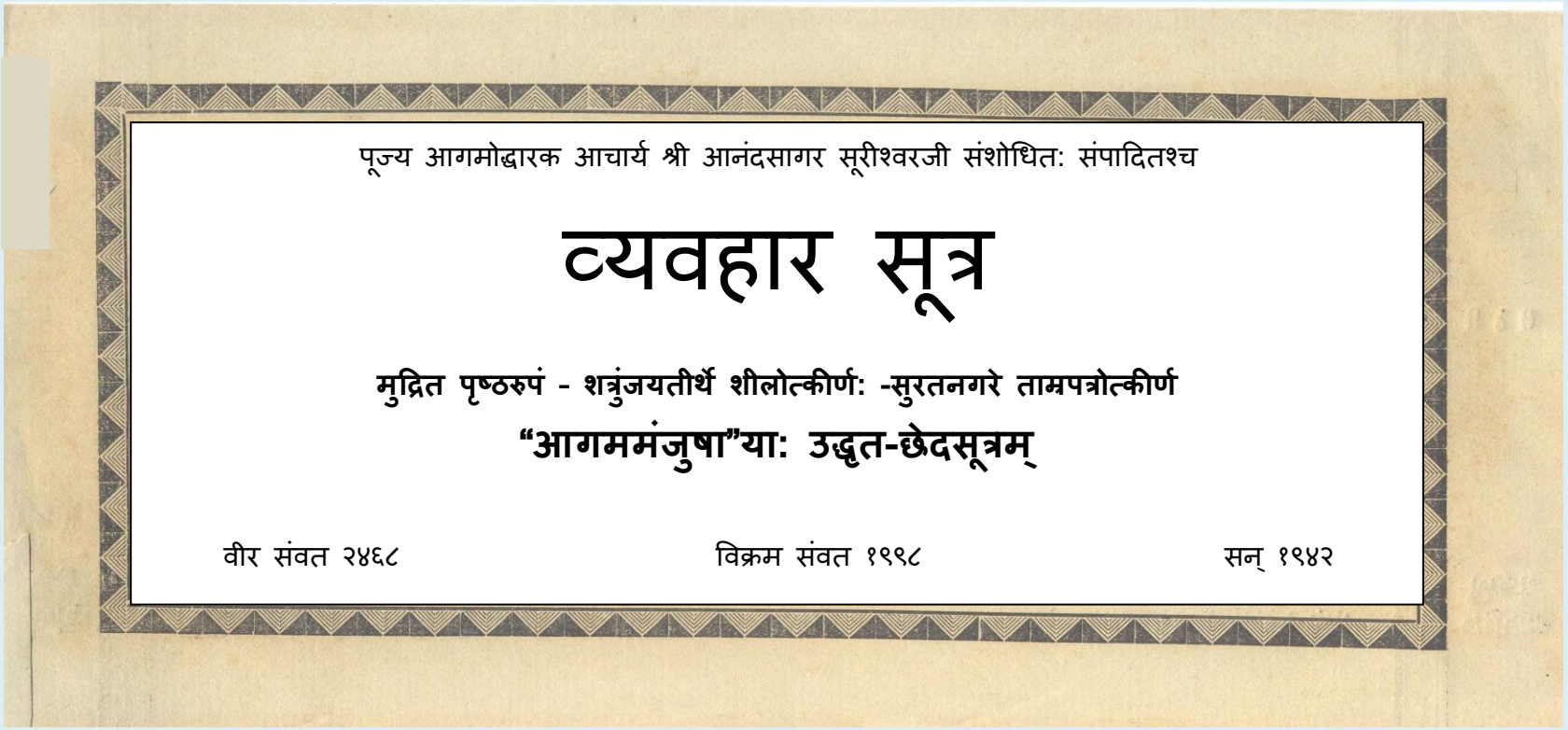

पूज्य आगमोद्धारक आचार्य श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी संशोधित: संपादितश्च

व्यवहार सूत्र

मुद्रित पृष्ठरुपं - शत्रुंजयतीर्थे शीलोत्कीर्ण: -सुरतनगरे ताम्रपत्रोत्कीर्ण

“आगममंजुषा”या: उद्धृत-छेदसूत्रम्

वीर संवत २४६८ विक्रम संवत १९९८ सन् १९४२

व्यवहार -छेदसूत्रस्य “टाइटल पेज”

मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक:		मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक:		मूलांक:	उद्देश:	पृष्ठांक:
००१	प्रथम:	००४		०३६	द्वितिय:	००६		०६६	तृतीय:	००७
०९५	चतुर्थ:	००८		१२७	पंचम:	०१०		१४८	षष्ठ:	०१२
१६०	सप्तम:	०११		१८७	अष्टम:	०१२		२०३	नवम:	०१३
२४९-२८५	दशम:	०१४		-----	-------	-----		-----	-------	-----

['व्यवहार' - मूलं] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

पूज्यपाद आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) के संशोधन एवं संपादन से सन १९४२ (विक्रम संवत १९९८) में ४५ आगम+वैकल्पिक दो आगम+ पांच निर्युक्तिओ एवं कल्पसूत्र को मिलाकर **"आगममंजुषा"** नाम से करीब १३०० पृष्ठ छपे, जिसकी साइज़ 20x30 इंच थी | इस संपादनमें ६+१ छेदसूत्र भी पूज्यश्रीने मुद्रित करवाए | यहीं **"आगममंजुषा"** पूज्यश्री की प्रेरणा से श्री शत्रुंजयतीर्थ की तलेटीमें आगममंदिरमें आरस के पट्ट पर भी उत्कीर्ण हुई और सुरतनगरमे ताम्रपत्र पर भी अंकित हुई | हमने उसी ६+१ छेदसूत्रो को फोटो-स्केन करवाया, फोटो-स्केन कोपी को पहले ' A-4' साइज़ मे लेजाकर अलग-अलग ६+१ किताबो के रुपमे रखा, फ़िर उसी को इन्टरनेट पर भी अपलोड करवाया और हमारे प्रकाशनो कि DVD मे भी उनको स्थान दे दिया |

✣ **हमारा ये प्रयास क्यों?** ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, **४५-आगम सटीक** भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा आदर देखकर हमने इसी ६+१ छेदसूत्रो को प्रत-स्वरुपमें यहां सम्मिलित कर दिया, ताँकी भविष्यमे को यह् न कहे कि इस संपुटमें ३९ आगम हि है, और ६ आगम कम है |

एक **स्पेशियल फोरमेट** बनवा कर हमने बीचमे पूज्यश्री संपादित पृष्ठो को ज्यों के त्यों रख दिए, ऊपर **शीर्षस्थानमे** आगम का नाम, फिर अध्ययन या उद्देशक तथा मूलसूत्र या गाथाजो जहां प्राप्त है उसके क्रमांक लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन या उद्देशक तथा सूत्र या गाथा चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ **आगम** का **क्रम** और इसी **प्रत** का **सूत्रक्रम** दिया है, उसके साथ वहाँ **'दीप अनुक्रम'** भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रो के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ **कौंस [-]** दिए है और जहां गाथा है वहाँ **||-||** ऐसी **दो लाइन** खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चहिते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे **विशिष्ठ फूटनोट** भी लिखी है, जहां उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन-भूल सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीँ सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है| **.....मुनि दीपरत्नसागर.....**

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] "बृहत्कल्प" मूलं

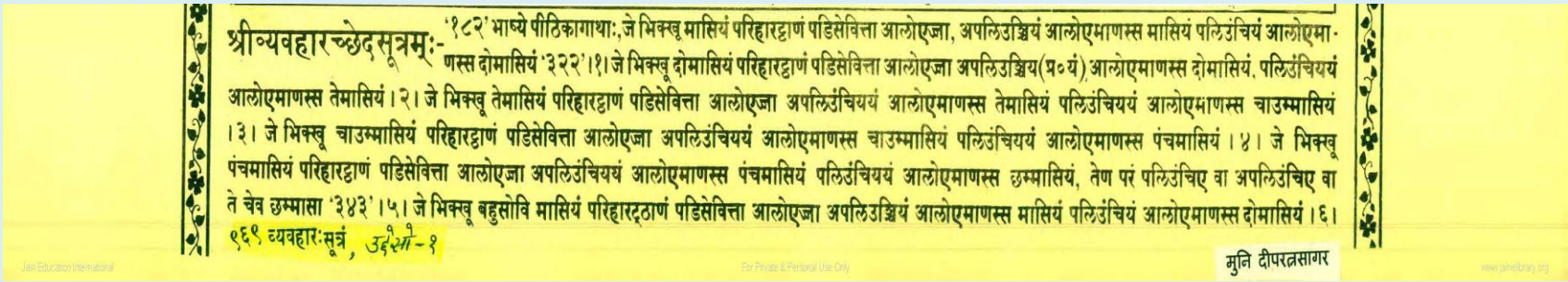

आगम (३६)	“व्यवहार” - छेदसूत्र-३ (मूलं) ---------- उद्देश: [१] -- मूलं [१] ----------
प्रत सूत्रांक [१] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं श्रीव्यवहारच्छेदसूत्रम्:- ‘१८२’ भाष्ये पीठिकागाथा:, जे भिक्खू मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स मासियं पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं ‘३२२’।१। जे भिक्खू दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चिय(प्र० यं) आलोएमाणस्स दोमासियं. पलिउंचिययं आलोएमाणस्स तेमासियं।२। जे भिक्खू तेमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचिययं आलोएमाणस्स तेमासियं पलिउंचिययं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं।३। जे भिक्खू चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचिययं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं पलिउंचिययं आलोएमाणस्स पंचमासियं।४। जे भिक्खू पंचमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचिययं आलोएमाणस्स पंचमासियं पलिउंचिययं आलोएमाणस्स छम्मासियं, तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ‘३४३’।५। जे भिक्खू बहुसोवि मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स मासियं पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं।६। ९६९ व्यवहार:सूत्रं, उद्देसो-१ मुनि दीपरत्नसागर
	अत्र उद्देशक: १ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित...........आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] "व्यवहार" मूलं

एवं जे भिक्खू बहुसोवि दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स दोमासियं पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स तेमासियं।७। ० बहुसोवि तेमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेविऊण आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स तेमासियं पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं।८। ० बहुसोवि चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स पञ्चमासियं।९। ० बहुसोवि पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चियं आलोएमाणस्स पञ्चमासियं पलिउञ्चियं आलोएमाणस्स छम्मासियं, तेण परं पलिउञ्चियं वा अपलिउञ्चियं वा ते चेव छम्मासा।१०। ० मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पञ्चमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउञ्चिययं आलोएमाणस्स मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पञ्चमासियं वा, पलिउंचिययं आलोएमाणस्स दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा, तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा।११। जे० बहुसोवि मासियं वा दोमासियं वा० छम्मासा '५१०'।१२। जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचिययं आलोएमाणस्स चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा पलिउंचिययं आलोएमाणस्स पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा छम्मासियं वा, तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा।१३। जे भिक्खू बहुसोवि चाउम्मासियं वा०।१४। ० साइरेगचाउम्मासियं वा।१५। ० पंचमासियं वा।१६। ० साइरेगपंचमासियं वा।१७। एवं चेव भाणियव्वं जा छम्मासा '५३५'।१८। जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अपलिउंचिययं आलोएमाणस्स ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं, ठविएवि पडिसेविया सेवि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया, पुव्विं पडिसेवियं पुव्विं आलोइयं, पुव्विं पडिसेवियं पच्छा आलोइयं, पच्छा पडिसेवियं पुव्विं आलोइयं, पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइयं, अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं, पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं, आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहणियं जे एयाए पट्ठवणाए पट्ठविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ सेवि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया।१९। एवं बहुसोवि जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अण्णयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा पलिउंचियं आलोएमाणस्स ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं जाव पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइयं जाव पलिउंचिए आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं साहणियं आरुहेयव्वे सिया, एवं अपलिउंचिए '६०१'।२०। जे भिक्खू चाउम्मासियं वा० आलोएज्जा, पलिउंचियं आलोएमाणस्स० पलिउंचिए पलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं आलोएमाणस्स आरुहेयव्वे सिया।२१। जे भिक्खू बहुसोवि चाउम्मासियं वा बहुसोवि साइरेग० वा० आरुहियव्वे सिया '६२६'।२२। बहवे पारिहारिया बहवे अपारिहारिया इच्छेज्जा एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए नो से कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, कप्पइ ण्हं से थेरे आपुच्छित्ता एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, थेरा य ण्हं से वियरेज्जा एवं ण्हं कप्पइ एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, थेरा य ण्हं से नो वियरेज्जा एवं ण्हं नो कप्पइ एगयओ अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेइत्तए, जो णं थेरेहिं अविइण्णं अभिनिसेज्जं वा अभिनिसीहियं वा चेएइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '६९३'।२३। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य से सरेज्जा कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अन्ने साहम्मिया विहरंति तण्णं तण्णं दिसं उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तियं वत्थए, कप्पइ से तत्थ कारणवत्तियं वत्थए, तंसि च णं कारणंसि णिट्ठियंसि परो वएज्जा 'वसाहि अज्जो! एगरायं वा दुरायं वा' एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो से कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसित्तए, जो णं तत्थ एग० दुरा० परं वसइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा।२४। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य से नो सरेज्जा, कप्पइ से निव्विसमाणस्स एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं जाव तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ परं वसइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा '७६७'।२५। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा थेरा य से सरेज्जा वा नो सरेज्जा वा कप्पइ से निव्विसमाणस्स एगराइयाए जाव छेए वा परिहारे वा।२६। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, पुणो आलोएज्जा पुणो पडिक्कमेज्जा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्ठाएज्जा।२७। एवं गणावच्छेइए वा।२८। एवं आयरिए।२९। एवं उवज्झाए।३०। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म पासत्थविहारे विहरेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अत्थि याइं थ से पुणो आलोएज्जा पुणो पडिक्कमेज्जा पुणो

१७० व्यवहारःसूत्रं, उद्देसो - १

मुनि दीपरत्नसागर

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

आगम (३६)	"व्यवहार" - छेदसूत्र-३ (मूलं) ---------- उद्देश: [१] -- मूलं [३१] ----------

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] "व्यवहार" मूलं

प्रत
सूत्रांक
[३१]

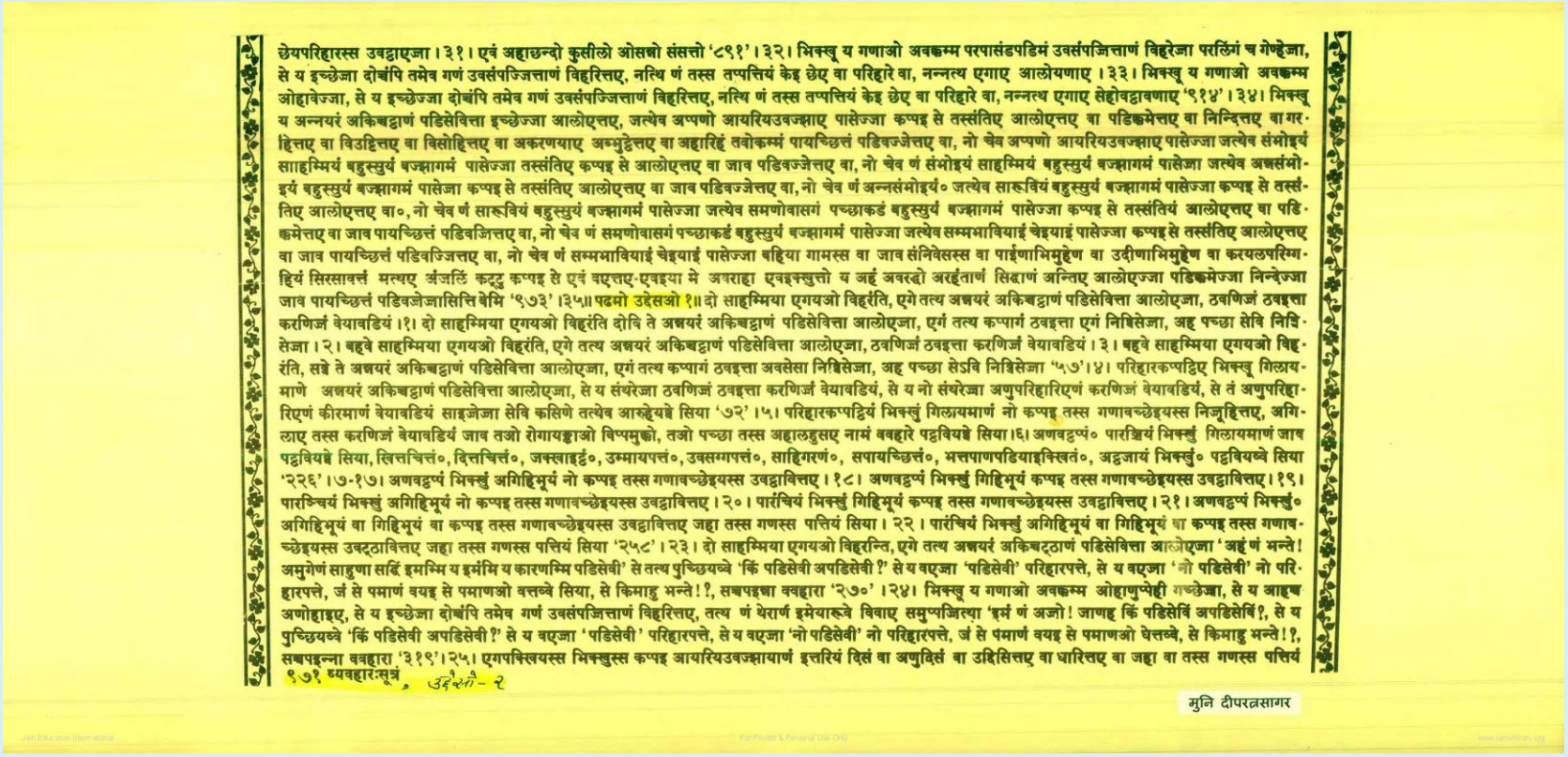

दीप
अनुक्रम
[२५]

छेयपरिहारस्स उवट्ठाएज्जा । ३१ । एवं अहाछन्दो कुसीलो ओसन्नो संसत्तो '८९१' । ३२ । भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म परपासंडपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेज्जा परलिंगं च गेण्हेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नत्थि णं तस्स तप्पत्तियं केइ छेए वा परिहारे वा, नन्नत्थ एगाए आलोयणाए । ३३ । भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म ओहावेज्जा, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, नत्थि णं तस्स तप्पत्तियं केइ छेए वा परिहारे वा, नन्नत्थ एगाए सेहोवट्ठावणाए '९१४' । ३४ । भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता इच्छेज्जा आलोएत्तए, जत्थेव अप्पणो आयरियउवज्झाए पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा पडिक्कमेत्तए वा निन्दित्तए वा गरहित्तए वा विउट्टित्तए वा विसोहित्तए वा अकरणयाए अब्भुट्ठेत्तए वा अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जेत्तए वा, नो चेव अप्पणो आयरियउवज्झाए पासेज्जा जत्थेव संभोइयं साहम्मियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा तस्संतिए कप्पइ से आलोएत्तए वा जाव पडिवज्जेत्तए वा, नो चेव णं संभोइयं साहम्मियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा जत्थेव अन्नसंभोइयं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा जाव पडिवज्जेत्तए वा, नो चेव णं अन्नसंभोइयं० जत्थेव सारूवियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा०, नो चेव णं सारूवियं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा जत्थेव समणोवासगं पच्छाकडं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतियं आलोएत्तए वा पडिक्कमेत्तए वा जाव पायच्छित्तं पडिवज्जित्तए वा, नो चेव णं समणोवासगं पच्छाकडं बहुस्सुयं बज्झागमं पासेज्जा जत्थेव सम्मभावियाइं चेइयाइं पासेज्जा कप्पइ से तस्संतिए आलोएत्तए वा जाव पायच्छित्तं पडिवज्जित्तए वा, नो चेव णं सम्मभावियाइं चेइयाइं पासेज्जा बहिया गामस्स वा जाव संनिवेसस्स वा पाईणाभिमुहेण वा उदीणाभिमुहेण वा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कप्पइ से एवं वएत्तए-एवइया मे अवराहा एवइक्खुत्तो य अहं अवरद्धो अरहंताणं सिद्धाणं अन्तिए आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा निन्देज्जा जाव पायच्छित्तं पडिवज्जेज्जासित्ति बेमि '९७३' ।३५॥ पढमो उद्देसओ १॥ दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, एगे तत्थ अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं ।१। दो साहम्मिया एगयओ विहरंति दोवि ते अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, एगं तत्थ कप्पागं ठवइत्ता एगं निव्विसेज्जा, अह पच्छा सेवि निव्विसेज्जा । २ । बहवे साहम्मिया एगयओ विहरंति, एगे तत्थ अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं । ३ । बहवे साहम्मिया एगयओ विहरंति, सव्वे ते अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, एगं तत्थ कप्पागं ठवइत्ता अवसेसा निव्विसेज्जा, अह पच्छा सेऽवि निव्विसेज्जा '५७'।४। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू गिलायमाणे अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, से य संथरेज्जा ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं, से य नो संथरेज्जा अणुपरिहारिएणं करणिज्जं वेयावडियं, से तं अणुपरिहारिएणं कीरमाणं वेयावडियं साइज्जेज्जा सेवि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया '७२' ।५। परिहारकप्पट्ठियं भिक्खुं गिलायमाणं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स निज्जूहित्तए, अगिलाए तस्स करणिज्जं वेयावडियं जाव तओ रोगायङ्काओ विप्पमुक्को, तओ पच्छा तस्स अहालहुसए नामं ववहारे पट्ठवियव्वे सिया।६। अणवट्ठप्पं० पारञ्चियं भिक्खुं गिलायमाणं जाव पट्ठवियव्वे सिया, खित्तचित्तं०, दित्तचित्तं०, जक्खाइट्ठं०, उम्मायपत्तं०, उवसग्गपत्तं०, साहिगरणं०, सपायच्छित्तं०, भत्तपाणपडियाइक्खितं०, अट्ठजायं भिक्खुं० पट्ठवियव्वे सिया '२२६' ।७-१७। अणवट्ठप्पं भिक्खुं अगिहिभूयं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए । १८ । अणवट्ठप्पं भिक्खुं गिहिभूयं कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए । १९ । पारञ्चियं भिक्खुं अगिहिभूयं नो कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए । २० । पारंचियं भिक्खुं गिहिभूयं कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए । २१ । अणवट्ठप्पं भिक्खुं० अगिहिभूयं वा गिहिभूयं वा कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए जहा तस्स गणस्स पत्तियं सिया । २२ । पारंचियं भिक्खुं अगिहिभूयं वा गिहिभूयं वा कप्पइ तस्स गणावच्छेइयस्स उवट्ठावित्तए जहा तस्स गणस्स पत्तियं सिया '२५८' । २३ । दो साहम्मिया एगयओ विहरन्ति, एगे तत्थ अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा 'अहं णं भन्ते! अमुगेणं साहुणा सद्धिं इमम्मि य इमंमि य कारणम्मि पडिसेवी' से तत्थ पुच्छियव्वे 'किं पडिसेवी अपडिसेवी ?' से य वएज्जा 'पडिसेवी' परिहारपत्ते, से य वएज्जा 'नो पडिसेवी' नो परिहारपत्ते, जं से पमाणं वयइ से पमाणओ वत्तव्वे सिया, से किमाहु भन्ते!?, सच्चपइन्ना ववहारा '२७०' ।२४। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म ओहाणुप्पेही गच्छेज्जा, से य आहच्च अणोहाइए, से य इच्छेज्जा दोच्चंपि तमेव गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, तत्थ णं थेराणं इमेयारूवे विवाए समुप्पज्जित्था 'इमं णं अज्जो! जाणह किं पडिसेविं अपडिसेविं?, से य पुच्छियव्वे 'किं पडिसेवी अपडिसेवी?' से य वएज्जा 'पडिसेवी' परिहारपत्ते, से य वएज्जा 'नो पडिसेवी' नो परिहारपत्ते, जं से पमाणं वयइ से पमाणओ घेत्तव्वे, से किमाहु भन्ते!?, सच्चपइन्ना ववहारा '३१९'।२५। एगपक्खियस्स भिक्खुस्स कप्पइ आयरियउवज्झायाणं इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारित्तए वा जहा वा तस्स गणस्स पत्तियं

९७१ व्यवहारःसूत्रं, उद्देशो - २

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशक: २ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [२६]

दीप अनुक्रम [६१]

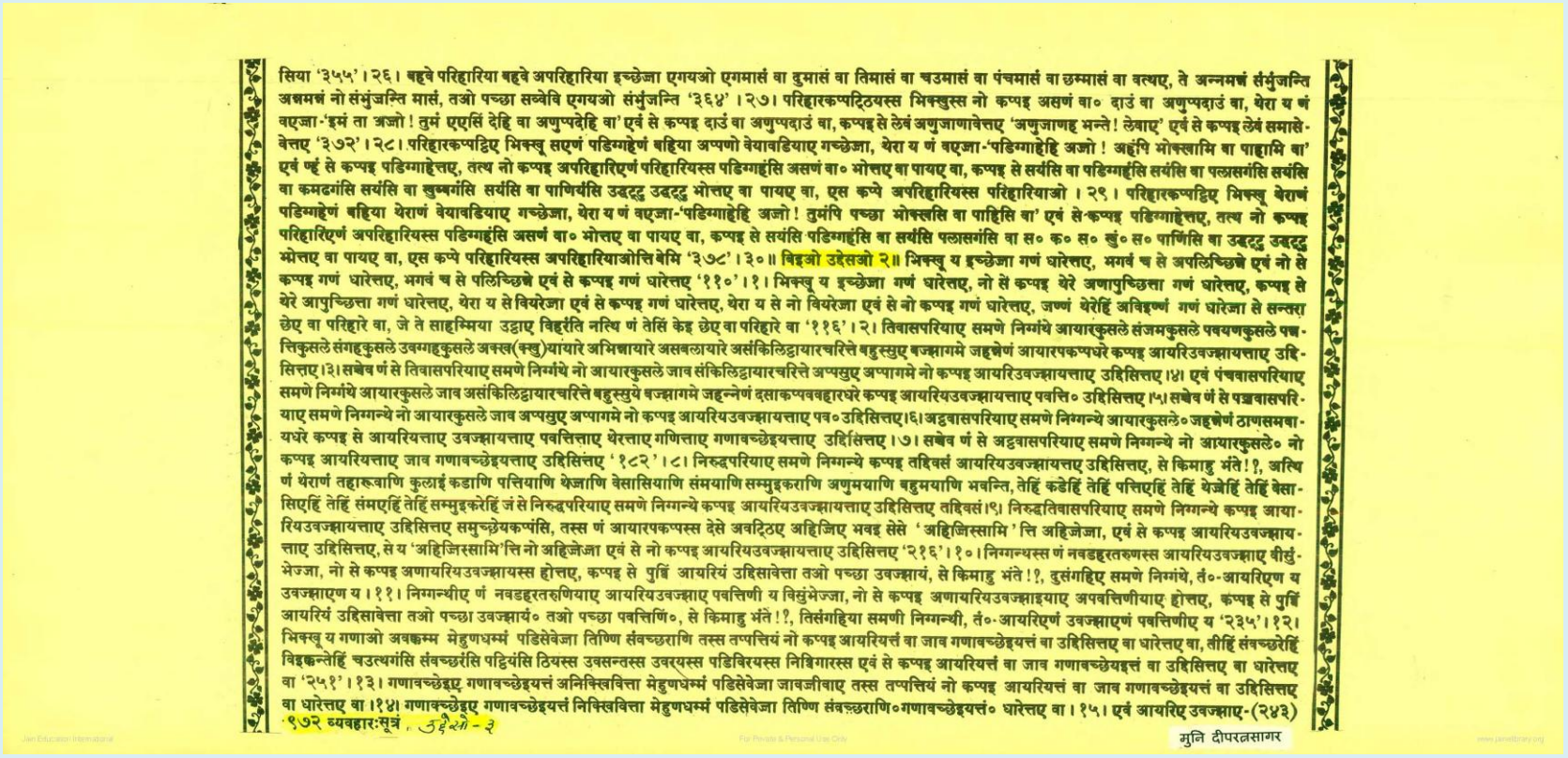

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

सिया '३५५'।२६। बहवे परिहारिया बहवे अपरिहारिया इच्छेज्जा एगयओ एगमासं वा दुमासं वा तिमासं वा चउमासं वा पंचमासं वा छम्मासं वा वत्थए, ते अन्नमन्नं संभुंजन्ति अन्नमन्नं नो संभुंजन्ति मासं, तओ पच्छा सव्वेवि एगयओ संभुंजन्ति '३६४'।२७। परिहारकप्पट्ठियस्स भिक्खुस्स नो कप्पइ असणं वा० दाउं वा अणुप्पदाउं वा, थेरा य णं वएज्जा-'इमं ता अज्जो! तुमं एएसिं देहि वा अणुप्पदेहि वा' एवं से कप्पइ दाउं वा अणुप्पदाउं वा, कप्पइ से लेवं अणुजाणावेत्तए 'अणुजाणह भन्ते! लेवाए' एवं से कप्पइ लेवं समासेवेत्तए '३७२'।२८। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू सएणं पडिग्गहेणं बहिया अप्पणो वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य णं वएज्जा-'पडिग्गाहेहि अज्जो! अहंपि भोक्खामि वा पाहामि वा' एवं ण्हं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए, तत्थ नो कप्पइ अपरिहारिएणं परिहारियस्स पडिग्गहंसि असणं वा० भोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से सयंसि वा पडिग्गहंसि सयंसि वा पलासगंसि सयंसि वा कमढगंसि सयंसि वा खुव्वगंसि सयंसि वा पाणियंसि उद्धट्टु उद्धट्टु भोत्तए वा पायए वा, एस कप्पे अपरिहारियस्स परिहारियाओ।२९। परिहारकप्पट्ठिए भिक्खू थेराणं पडिग्गहेणं बहिया थेराणं वेयावडियाए गच्छेज्जा, थेरा य णं वएज्जा-'पडिग्गाहेहि अज्जो! तुमंपि पच्छा भोक्खसि वा पाहिसि वा' एवं से कप्पइ पडिग्गाहेत्तए, तत्थ नो कप्पइ परिहारिएणं अपरिहारियस्स पडिग्गहंसि असणं वा० भोत्तए वा पायए वा, कप्पइ से सयंसि पडिग्गहंसि वा सयंसि पलासगंसि वा स० क० स० खुं० स० पाणिंसि वा उद्धट्टु उद्धट्टु भोत्तए वा पायए वा, एस कप्पे परिहारियस्स अपरिहारियाओत्ति बेमि '३७८'।३०॥ बिइओ उद्देसओ २॥ भिक्खू य इच्छेज्जा गणं धारेत्तए, भगवं च से अपलिच्छिन्ने एवं नो से कप्पइ गणं धारेत्तए, भगवं च से पलिच्छिन्ने एवं से कप्पइ गणं धारेत्तए '११०'।१। भिक्खू य इच्छेज्जा गणं धारेत्तए, नो से कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता गणं धारेत्तए, कप्पइ से थेरे आपुच्छित्ता गणं धारेत्तए, थेरा य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ गणं धारेत्तए, थेरा य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ गणं धारेत्तए, जण्णं थेरेहिं अविइण्णं गणं धारेज्जा से सन्तरा छेए वा परिहारे वा, जे ते साहम्मिया उट्ठाए विहरंति नत्थि णं तेसिं केइ छेए वा परिहारे वा '११६'।२। तिवासपरियाए समणे निग्गंथे आयारकुसले संजमकुसले पवयणकुसले पन्नत्तिकुसले संगहकुसले उवग्गहकुसले अक्खय(क्खु)यायारे अभिन्नायारे असबलायारे असंकिलिट्ठायारचरित्ते बहुस्सुए बज्झागमे जहन्नेणं आयारपकप्पधरे कप्पइ आयरिउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए।३। सच्चेव णं से तिवासपरियाए समणे निग्गंथे नो आयारकुसले जाव संकिलिट्ठायारचरित्ते अप्पसुए अप्पागमे नो कप्पइ आयरिउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए।४। एवं पंचवासपरियाए समणे निग्गंथे आयारकुसले जाव असंकिलिट्ठायारचरित्ते बहुस्सुये बज्झागमे जहन्नेणं दसाकप्पववहारधरे कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए पवत्ति० उद्दिसित्तए।५। सच्चेव णं से पञ्चवासपरियाए समणे निग्गन्थे नो आयारकुसले जाव अप्पसुए अप्पागमे नो कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए पव० उद्दिसित्तए।६। अट्ठवासपरियाए समणे निग्गन्थे आयारकुसले० जहन्नेणं ठाणसमवायधरे कप्पइ से आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए पवत्तित्ताए थेरत्ताए गणित्ताए गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए।७। सच्चेव णं से अट्ठवासपरियाए समणे निग्गन्थे नो आयारकुसले० नो कप्पइ आयरियत्ताए जाव गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए '१८२'।८। निरुद्धपरियाए समणे निग्गन्थे कप्पइ तद्दिवसं आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए, से किमाहु भंते!?, अत्थि णं थेराणं तहारूवाणि कुलाइं कडाणि पत्तियाणि थेज्जाणि वेसासियाणि संमयाणि सम्मुइकराणि अणुमयाणि बहुमयाणि भवन्ति, तेहिं कडेहिं तेहिं पत्तिएहिं तेहिं थेज्जेहिं तेहिं वेसासिएहिं तेहिं संमएहिं तेहिं सम्मुइकरेहिं जं से निरुद्धपरियाए समणे निग्गन्थे कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए तद्दिवसं।९। निरुद्धतिवासपरियाए समणे निग्गन्थे कप्पइ आयारियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए समुच्छेयकप्पंसि, तस्स णं आयारपकप्पस्स देसे अवट्ठिए अहिज्जिए भवइ सेसे 'अहिज्जिस्सामि' त्ति अहिज्जेज्जा, एवं से कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए, से य 'अहिज्जिस्सामि'त्ति नो अहिज्जेज्जा एवं से नो कप्पइ आयरियउवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए '२१६'।१०। निग्गन्थस्स णं नवडहरतरुणस्स आयरियउवज्झाए वीसुंभेज्जा, नो से कप्पइ अणायरियउवज्झायस्स होत्तए, कप्पइ से पुव्विं आयरियं उद्दिसावेत्ता तओ पच्छा उवज्झायं, से किमाहु भंते!?, दुसंगहिए समणे निग्गंथे, तं०-आयरिएण य उवज्झाएण य।११। निग्गन्थीए णं नवडहरतरुणियाए आयरियउवज्झाए पवत्तिणी य विसुंभेज्जा, नो से कप्पइ अणायरियउवज्झाइयाए अपवत्तिणीयाए होत्तए, कप्पइ से पुव्विं आयरियं उद्दिसावेत्ता तओ पच्छा उवज्झायं० तओ पच्छा पवत्तिणिं०, से किमाहु भंते!?, तिसंगहिया समणी निग्गन्थी, तं०-आयरिएणं उवज्झाएणं पवत्तिणीए य '२३५'।१२। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म मेहुणधम्मं पडिसेवेज्जा तिण्णि संवच्छराणि तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, तीहिं संवच्छरेहिं विइक्कन्तेहिं चउत्थगंसि संवच्छरंसि पट्ठियंसि ठियस्स उवसन्तस्स उवरयस्स पडिविरयस्स निव्विगारस्स एवं से कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेयइत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा '२५१'।१३। गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्तं अनिक्खिवित्ता मेहुणधम्मं पडिसेवेज्जा जावज्जीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।१४। गणावच्छेइए गणावच्छेइयत्तं निक्खिवित्ता मेहुणधम्मं पडिसेवेज्जा तिण्णि संवच्छराणि० गणावच्छेइयत्तं० धारेत्तए वा।१५। एवं आयरिए उवज्झाए-(२४३)

९७२ व्यवहारःसूत्रं , उद्देसो - ३

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशक: ३ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [१७] दीप अनुक्रम [८२]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] "व्यवहार" मूलं

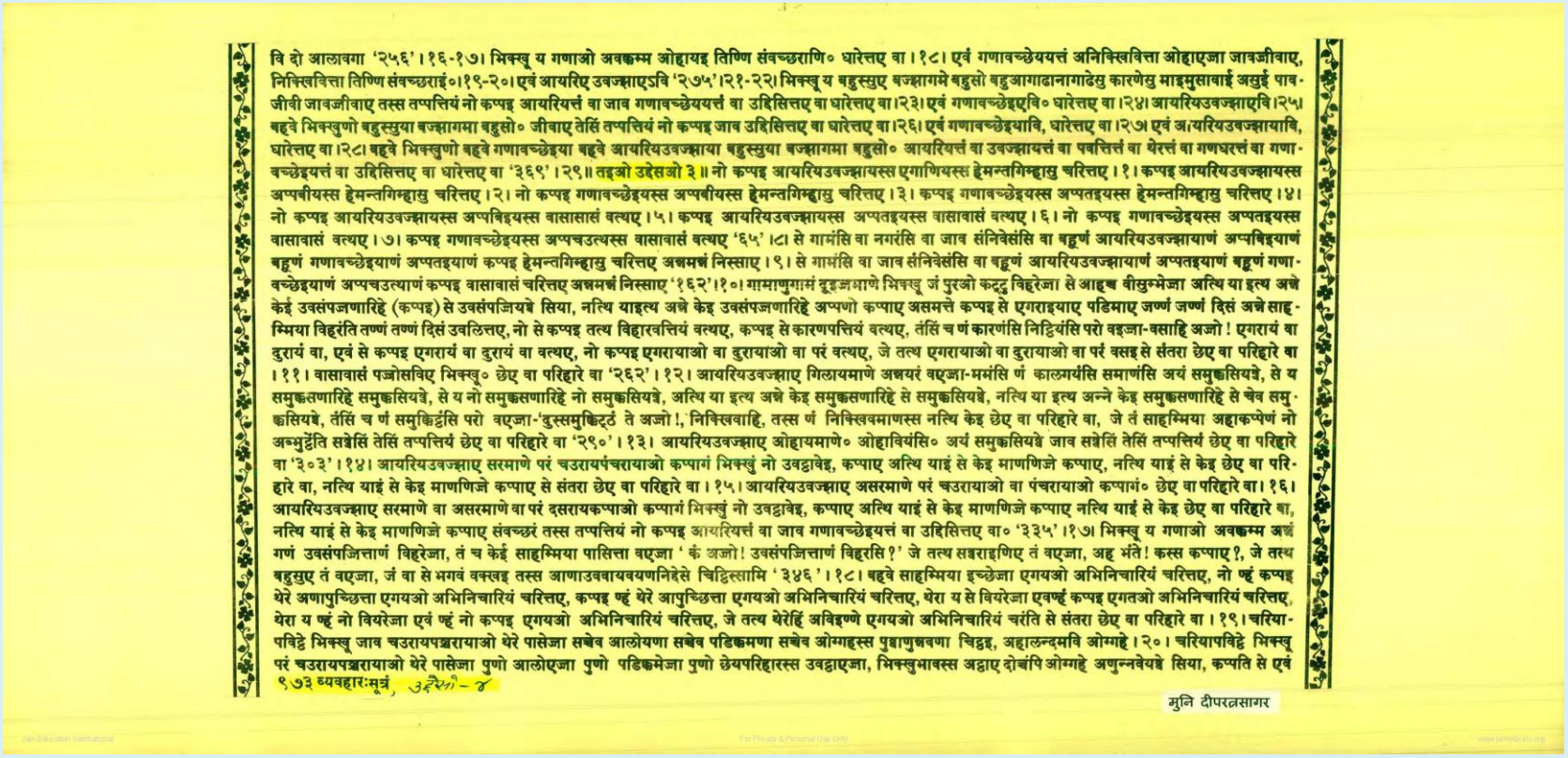

वि दो आलावगा '२५६'।१६-१७। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म ओहायइ तिण्णि संवच्छराणि० धारेत्तए वा।१८। एवं गणावच्छेययत्तं अनिक्खिवित्ता ओहाएज्जा जावज्जीवाए, निक्खिवित्ता तिण्णि संवच्छराइं०।१९-२०। एवं आयरिए उवज्झाएऽवि '२७५'।२१-२२। भिक्खू य बहुस्सुए बज्झागमे बहुसो बहुआगाढानागाढेसु कारणेसु माइमुसावाई असुई पावजीवी जावज्जीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेययत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।२३। एवं गणावच्छेइएवि० धारेत्तए वा।२४। आयरियउवज्झाएवि।२५। बहवे भिक्खुणो बहुस्सुया बज्झागमा बहुसो० जीवाए तेसिं तप्पत्तियं नो कप्पइ जाव उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।२६। एवं गणावच्छेइयावि, धारेत्तए वा।२७। एवं आयरियउवज्झायावि, धारेत्तए वा।२८। बहवे भिक्खुणो बहवे गणावच्छेइया बहवे आयरियउवज्झाया बहुस्सुया बज्झागमा बहुसो० आयरियत्तं वा उवज्झायत्तं वा पवत्तित्तं वा थेरत्तं वा गणधरत्तं वा गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा '३६९'।२९॥ तइओ उद्देसओ ३॥ नो कप्पइ आयरियउवज्झायस्स एगाणियस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए।१। कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पबीयस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए।२। नो कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पबीयस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए।३। कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पतइयस्स हेमन्तगिम्हासु चरित्तए।४। नो कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पबिइयस्स वासासासं वत्थए।५। कप्पइ आयरियउवज्झायस्स अप्पतइयस्स वासावासं वत्थए।६। नो कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पतइयस्स वासावासं वत्थए।७। कप्पइ गणावच्छेइयस्स अप्पचउत्थस्स वासावासं वत्थए '६५'।८। से गामंसि वा नगरंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं आयरियउवज्झायाणं अप्पबिइयाणं बहूणं गणावच्छेइयाणं अप्पतइयाणं कप्पइ हेमन्तगिम्हासु चरित्तए अन्नमन्नं निस्साए।९। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं आयरियउवज्झायाणं अप्पतइयाणं बहूणं गणावच्छेइयाणं अप्पचउत्थाणं कप्पइ वासावासं चरित्तए अन्नमन्नं निस्साए '१६२'।१०। गामाणुगामं दूइज्जमाणे भिक्खू जं पुरओ कट्टु विहरेज्जा से आहच्च वीसुम्भेज्जा अत्थि या इत्थ अन्ने केई उवसंपज्जणारिहे (कप्पइ) से उवसंपज्जियव्वे सिया, नत्थि याइत्थ अन्ने केइ उवसंपज्जणारिहे अप्पणो कप्पाए असमत्ते कप्पइ से एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अन्ने साहम्मिया विहरंति तण्णं तण्णं दिसं उवलित्तए, नो से कप्पइ तत्थ विहारवत्तियं वत्थए, कप्पइ से कारणपत्तियं वत्थए, तंसिं च णं कारणंसि निट्ठियंसि परो वइज्जा-वसाहि अज्जो! एगरायं वा दुरायं वा, एवं से कप्पइ एगरायं वा दुरायं वा वत्थए, नो कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जे तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसइ से संतरा छेए वा परिहारे वा।११। वासावासं पज्जोसविए भिक्खू० छेए वा परिहारे वा '२६२'।१२। आयरियउवज्झाए गिलायमाणे अन्नयरं वएज्जा-ममंसि णं कालगयंसि समाणंसि अयं समुक्कसियव्वे, से य समुक्कसणारिहे समुक्कसियव्वे, से य नो समुक्कसणारिहे नो समुक्कसियव्वे, अत्थि या इत्थ अन्ने केइ समुक्कसणारिहे से समुक्कसियव्वे, नत्थि या इत्थ अन्ने केइ समुक्कसणारिहे से चेव समुक्कसियव्वे, तंसिं च णं समुक्किट्ठंसि परो वएज्जा-'दुस्समुक्किट्ठं ते अज्जो!', निक्खिवाहि, तस्स णं निक्खिवमाणस्स नत्थि केइ छेए वा परिहारे वा, जे तं साहम्मिया अहाकप्पेणं नो अब्भुट्ठेंति सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा '२९०'।१३। आयरियउवज्झाए ओहायमाणे० ओहावियंसि० अयं समुक्कसियव्वे जाव सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा '३०३'।१४। आयरियउवज्झाए सरमाणे परं चउरायपंचरायाओ कप्पागं भिक्खुं नो उवट्ठावेइ, कप्पाए अत्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए, नत्थि याइं से केइ छेए वा परिहारे वा, नत्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए से संतरा छेए वा परिहारे वा।१५। आयरियउवज्झाए असरमाणे परं चउरायाओ वा पंचरायाओ कप्पागं० छेए वा परिहारे वा।१६। आयरियउवज्झाए सरमाणे वा असरमाणे वा परं दसरायकप्पाओ कप्पागं भिक्खुं नो उवट्ठावेइ, कप्पाए अत्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए नत्थि याइं से केइ छेए वा परिहारे वा, नत्थि याइं से केइ माणणिज्जे कप्पाए संवच्छरं तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा० '३३५'।१७। भिक्खू य गणाओ अवक्कम्म अन्नं गणं उवसंपज्जित्ताणं विहरेज्जा, तं च केई साहम्मिया पासित्ता वएज्जा 'कं अज्जो! उवसंपज्जित्ताणं विहरसि?' जे तत्थ सव्वराइणिए तं वएज्जा, अह भंते! कस्स कप्पाए?, जे तत्थ बहुसुए तं वएज्जा, जं वा से भगवं वक्खइ तस्स आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामि '३४६'।१८। बहवे साहम्मिया इच्छेज्जा एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए, नो ण्हं कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए, कप्पइ ण्हं थेरे आपुच्छित्ता एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए, थेरा य से वियरेज्जा एवण्हं कप्पइ एगतओ अभिनिचारियं चरित्तए, थेरा य ण्हं नो वियरेज्जा एवं ण्हं नो कप्पइ एगयओ अभिनिचारियं चरित्तए, जे तत्थ थेरेहिं अविइण्णे एगयओ अभिनिचारियं चरंति से संतरा छेए वा परिहारे वा।१९। चरियापविट्ठे भिक्खू जाव चउरायपञ्चरायाओ थेरे पासेज्जा सच्चेव आलोयणा सच्चेव पडिक्कमणा सच्चेव ओग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ, अहालन्दमवि ओग्गहे।२०। चरियापविट्ठे भिक्खू परं चउरायपञ्चरायाओ थेरे पासेज्जा पुणो आलोएज्जा पुणो पडिक्कमेज्जा पुणो छेयपरिहारस्स उवट्ठाएज्जा, भिक्खुभावस्स अट्ठाए दोच्चंपि ओग्गहे अणुन्नवेयव्वे सिया, कप्पति से एवं

९७३ व्यवहारःसूत्रं, उद्देसो-४

मुनि दीपरत्नसागर

For Private & Personal Use Only

अत्र उद्देशक: ४ आरब्ध:

प्रत
सूत्रांक
[२१]

दीप
अनुक्रम
[११५]

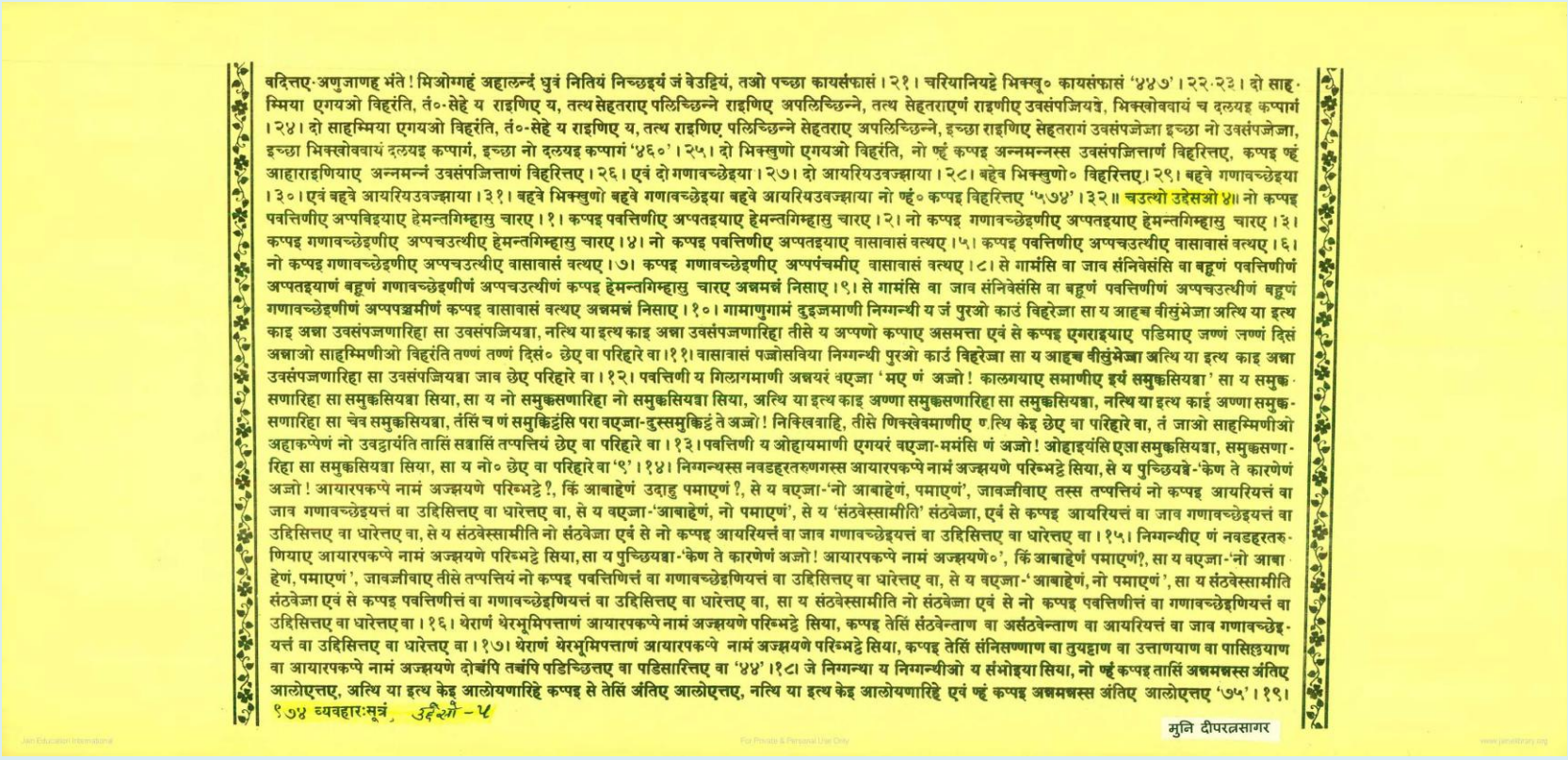

वदित्तए-अणुजाणह भंते! मिओग्गहं अहालन्दं धुवं नितियं निच्छइयं जं वेउट्टियं, तओ पच्छा कायसंफासं।२१। चरियानियट्टे भिक्खू॰ कायसंफासं '४४७'।२२-२३। दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, तं॰-सेहे य राइणिए य, तत्थ सेहतराए पलिच्छिन्ने राइणिए अपलिच्छिन्ने, तत्थ सेहतराएणं राइणीए उवसंपज्जियव्वे, भिक्खोववायं च दलयइ कप्पागं।२४। दो साहम्मिया एगयओ विहरंति, तं॰-सेहे य राइणिए य, तत्थ राइणिए पलिच्छिन्ने सेहतराए अपलिच्छिन्ने, इच्छा राइणिए सेहतरागं उवसंपज्जेज्जा इच्छा नो उवसंपज्जेज्जा, इच्छा भिक्खोववायं दलयइ कप्पागं, इच्छा नो दलयइ कप्पागं '४६०'।२५। दो भिक्खुणो एगयओ विहरंति, नो ण्हं कप्पइ अन्नमन्नस्स उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, कप्पइ ण्हं आहाराइणियाए अन्नमन्नं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।२६। एवं दो गणावच्छेइया।२७। दो आयरियउवज्झाया।२८। बहेव भिक्खुणो॰ विहरित्तए।२९। बहवे गणावच्छेइया।३०। एवं बहवे आयरियउवज्झाया।३१। बहवे भिक्खुणो बहवे गणावच्छेइया बहवे आयरियउवज्झाया नो ण्हं॰ कप्पइ विहरित्तए '५७४'।३२॥ चउत्थो उद्देसओ ४॥ नो कप्पइ पवत्तिणीए अप्पबिइयाए हेमन्तगिम्हासु चारए।१। कप्पइ पवत्तिणीए अप्पतइयाए हेमन्तगिम्हासु चारए।२। नो कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पतइयाए हेमन्तगिम्हासु चारए।३। कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पचउत्थीए हेमन्तगिम्हासु चारए।४। नो कप्पइ पवत्तिणीए अप्पतइयाए वासावासं वत्थए।५। कप्पइ पवत्तिणीए अप्पचउत्थीए वासावासं वत्थए।६। नो कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पचउत्थीए वासावासं वत्थए।७। कप्पइ गणावच्छेइणीए अप्पपंचमीए वासावासं वत्थए।८। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं पवत्तिणीणं अप्पतइयाणं बहूणं गणावच्छेइणीणं अप्पचउत्थीणं कप्पइ हेमन्तगिम्हासु चारए अन्नमन्नं निसाए।९। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहूणं पवत्तिणीणं अप्पचउत्थीणं बहूणं गणावच्छेइणीणं अप्पपञ्चमीणं कप्पइ वासावासं वत्थए अन्नमन्नं निसाए।१०। गामाणुगामं दुइज्जमाणी निग्गन्थी य जं पुरओ काउं विहरेज्जा सा य आहच्च वीसुंभेज्जा अत्थि या इत्थ काइ अन्ना उवसंपज्जणारिहा सा उवसंपज्जियव्वा, नत्थि या इत्थ काइ अन्ना उवसंपज्जणारिहा तीसे य अप्पणो कप्पाए असमत्ता एवं से कप्पइ एगराइयाए पडिमाए जण्णं जण्णं दिसं अन्नाओ साहम्मिणीओ विहरंति तण्णं तण्णं दिसं॰ छेए वा परिहारे वा।११। वासावासं पज्जोसविया निग्गन्थी पुरओ काउं विहरेज्जा सा य आहच्च वीसुंभेज्जा अत्थि या इत्थ काइ अन्ना उवसंपज्जणारिहा सा उवसंपज्जियव्वा जाव छेए परिहारे वा।१२। पवत्तिणी य गिलायमाणी अन्नयरं वएज्जा 'मए णं अज्जो! कालगयाए समाणीए इयं समुक्कसियव्वा' सा य समुक्कसणारिहा सा समुक्कसियव्वा सिया, सा य नो समुक्कसणारिहा नो समुक्कसियव्वा सिया, अत्थि या इत्थ काइ अण्णा समुक्कसणारिहा सा समुक्कसियव्वा, नत्थि या इत्थ काई अण्णा समुक्कसणारिहा सा चेव समुक्कसियव्वा, तंसिं च णं समुक्किट्ठंसि परा वएज्जा-दुस्समुक्किट्ठं ते अज्जो! निक्खिवाहि, तीसे णिक्खेवमाणीए ण त्थि केइ छेए वा परिहारे वा, तं जाओ साहम्मिणीओ अहाकप्पेणं नो उवट्ठायंति तासिं सव्वासिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा।१३। पवत्तिणी य ओहायमाणी एगयरं वएज्जा-ममंसि णं अज्जो! ओहाइयंसि एसा समुक्कसियव्वा, समुक्कसणारिहा सा समुक्कसियव्वा सिया, सा य नो॰ छेए वा परिहारे वा '९'।१४। निग्गन्थस्स नवडहरतरुणगस्स आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया, से य पुच्छियव्वे-'केण ते कारणेणं अज्जो! आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे?, किं आबाहेणं उदाहु पमाएणं?, से य वएज्जा-'नो आबाहेणं, पमाएणं', जावज्जीवाए तस्स तप्पत्तियं नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, से य वएज्जा-'आबाहेणं, नो पमाएणं', से य 'संठवेस्सामीति' संठवेज्जा, एवं से कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, से य संठवेस्सामीति नो संठवेज्जा एवं से नो कप्पइ आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।१५। निग्गन्थीए णं नवडहरतरुणियाए आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया, सा य पुच्छियव्वा-'केण ते कारणेणं अज्जो! आयारपकप्पे नामं अज्झयणे॰', किं आबाहेणं पमाएणं?, सा य वएज्जा-'नो आबाहेणं, पमाएणं', जावज्जीवाए तीसे तप्पत्तियं नो कप्पइ पवत्तिणित्तं वा गणावच्छेइणियत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, से य वएज्जा-'आबाहेणं, नो पमाएणं', सा य संठवेस्सामीति संठवेज्जा एवं से कप्पइ पवत्तिणीत्तं वा गणावच्छेइणियत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा, सा य संठवेस्सामीति नो संठवेज्जा एवं से नो कप्पइ पवत्तिणीत्तं वा गणावच्छेइणियत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।१६। थेराणं थेरभूमिपत्ताणं आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया, कप्पइ तेसिं संठवेन्ताण वा असंठवेन्ताण वा आयरियत्तं वा जाव गणावच्छेइयत्तं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।१७। थेराणं थेरभूमिपत्ताणं आयारपकप्पे नामं अज्झयणे परिब्भट्ठे सिया, कप्पइ तेसिं संनिसण्णाण वा तुयट्टाण वा उत्ताणयाण वा पासिल्लयाण वा आयारपकप्पे नामं अज्झयणे दोच्चंपि तच्चंपि पडिच्छित्तए वा पडिसारित्तए वा '४४'।१८। जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया, नो ण्हं कप्पइ तासिं अन्नमन्नस्स अंतिए आलोएत्तए, अत्थि या इत्थ केइ आलोयणारिहे कप्पइ से तेसिं अंतिए आलोएत्तए, नत्थि या इत्थ केइ आलोयणारिहे एवं ण्हं कप्पइ अन्नमन्नस्स अंतिए आलोएत्तए '७५'।१९।

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशक: ५ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [२१] दीप अनुक्रम [१४७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] "व्यवहार" मूलं

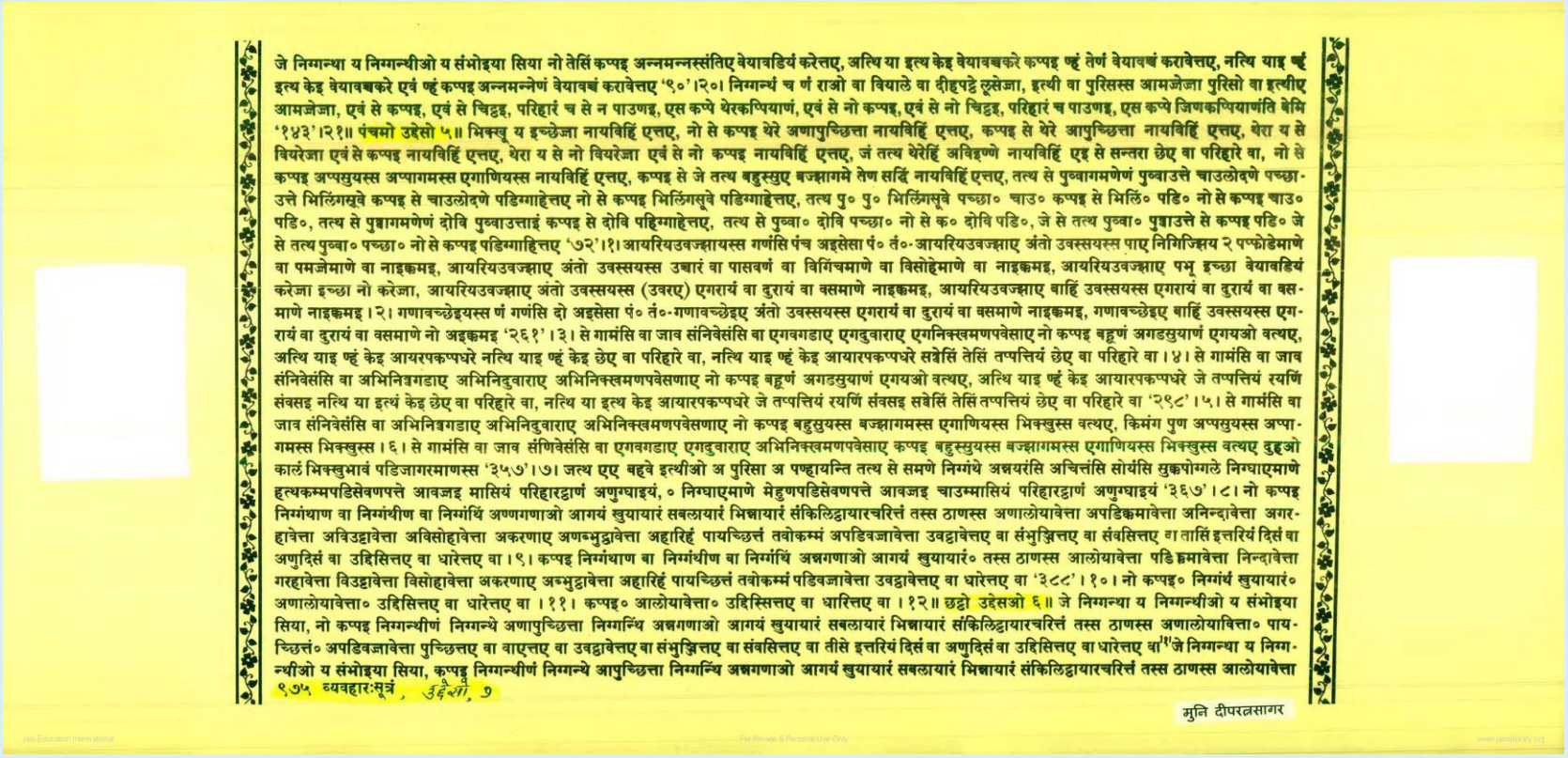

जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया नो तेसिं कप्पइ अन्नमन्नस्संतिए वेयावडियं करेत्तए, अत्थि या इत्थ केइ वेयावच्चकरे कप्पइ ण्हं तेणं वेयावच्चं करावेत्तए, नत्थि याइ ण्हं इत्थ केइ वेयावच्चकरे एवं ण्हं कप्पइ अन्नमन्नेणं वेयावच्चं करावेत्तए '९०'।२०। निग्गन्थं च णं राओ वा वियाले वा दीहपट्टे लूसेज्जा, इत्थी वा पुरिसस्स आमज्जेज्जा पुरिसो वा इत्थीए आमज्जेज्जा, एवं से कप्पइ, एवं से चिट्ठइ, परिहारं च से न पाउणइ, एस कप्पे थेरकप्पियाणं, एवं से नो कप्पइ, एवं से नो चिट्ठइ, परिहारं च पाउणइ, एस कप्पे जिणकप्पियाणंति बेमि '१४३'।२१॥ पंचमो उद्देसो ५॥ भिक्खू य इच्छेज्जा नायविहिं एत्तए, नो से कप्पइ थेरे अणापुच्छित्ता नायविहिं एत्तए, कप्पइ से थेरे आपुच्छित्ता नायविहिं एत्तए, थेरा य से वियरेज्जा एवं से कप्पइ नायविहिं एत्तए, थेरा य से नो वियरेज्जा एवं से नो कप्पइ नायविहिं एत्तए, जं तत्थ थेरेहिं अविइण्णे नायविहिं एइ से सन्तरा छेए वा परिहारे वा, नो से कप्पइ अप्पसुयस्स अप्पागमस्स एगाणियस्स नायविहिं एत्तए, कप्पइ से जे तत्थ बहुस्सुए बज्झागमे तेण सद्धिं नायविहिं एत्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते चाउलोदणे पच्छाउत्ते भिलिंगसूवे कप्पइ से चाउलोदणे पडिग्गाहेत्तए नो से कप्पइ भिलिंगसूवे पडिग्गाहेत्तए, तत्थ पु० पु० भिलिंगसूवे पच्छा० चाउ० कप्पइ से भिलिं० पडि० नो से कप्पइ चाउ० पडि०, तत्थ से पुव्वागमणेणं दोवि पुव्वाउत्ताइं कप्पइ से दोवि पहिग्गाहेत्तए, तत्थ से पुव्वा० दोवि पच्छा० नो से क० दोवि पडि०, जे से तत्थ पुव्वा० पुव्वाउत्ते से कप्पइ पडि० जे से तत्थ पुव्वा० पच्छा० नो से कप्पइ पडिग्गाहित्तए '७२'।१।आयरियउवज्झायस्स गणंसि पंच अइसेसा पं० तं०-आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सयस्स पाए निगिज्झिय २ पप्फोडेमाणे वा पमज्जेमाणे वा नाइक्कमइ, आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सयस्स उच्चारं वा पासवणं वा विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ, आयरियउवज्झाए पभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा इच्छा नो करेज्जा, आयरियउवज्झाए अंतो उवस्सयस्स (उवरए) एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ, आयरियउवज्झाए बाहिं उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ।२। गणावच्छेइयस्स णं गणंसि दो अइसेसा पं० तं०-गणावच्छेइए अंतो उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ, गणावच्छेइए बाहिं उवस्सयस्स एगरायं वा दुरायं वा वसमाणे नो अइक्कमइ '२६१'।३। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए नो कप्पइ बहूणं अगडसुयाणं एगयओ वत्थए, अत्थि याइ ण्हं केइ आयरपकप्पधरे नत्थि याइ ण्हं केइ छेए वा परिहारे वा, नत्थि याइ ण्हं केइ आयारपकप्पधरे सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा।४। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा अभिनिवगडाए अभिनिदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसणाए नो कप्पइ बहूणं अगडसुयाणं एगयओ वत्थए, अत्थि याइ ण्हं केइ आयारपकप्पधरे जे तप्पत्तियं रयणिं संवसइ नत्थि या इत्थं केइ छेए वा परिहारे वा, नत्थि या इत्थ केइ आयारपकप्पधरे जे तप्पत्तियं रयणिं संवसइ सव्वेसिं तेसिं तप्पत्तियं छेए वा परिहारे वा '२९८'।५। से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा अभिनिवगडाए अभिनिदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसणाए नो कप्पइ बहुसुयस्स बज्झागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स वत्थए, किमंग पुण अप्पसुयस्स अप्पागमस्स भिक्खुस्स।६। से गामंसि वा जाव संणिवेसंसि वा एगवगडाए एगदुवाराए अभिनिक्खमणपवेसाए कप्पइ बहुस्सुयस्स बज्झागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्स वत्थए दुहओ कालं भिक्खुभावं पडिजागरमाणस्स '३५७'।७। जत्थ एए बहवे इत्थीओ अ पुरिसा अ पण्हायन्ति तत्थ से समणे निग्गंथे अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि सुक्कपोग्गले निग्घाएमाणे हत्थकम्मपडिसेवणपत्ते आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं, ० निग्घाएमाणे मेहुणपडिसेवणपत्ते आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '३६७'।८। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा निग्गंथिं अण्णगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स अणालोयावेत्ता अपडिक्कमावेत्ता अनिन्दावेत्ता अगरहावेत्ता अविउट्टावेत्ता अविसोहावेत्ता अकरणाए अणब्भुट्ठावेत्ता अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं अपडिवज्जावेत्ता उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा संवसित्तए वा तासिं इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।९। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा निग्गंथिं अन्नगणाओ आगयं खुयायारं० तस्स ठाणस्स आलोयावेत्ता पडिक्कमावेत्ता निन्दावेत्ता गरहावेत्ता विउट्टावेत्ता विसोहावेत्ता अकरणाए अब्भुट्ठावेत्ता अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जावेत्ता उवट्ठावेत्तए वा धारेत्तए वा '३८८'।१०। नो कप्पइ० निग्गंथं खुयायारं० अणालोयावेत्ता० उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा।११। कप्पइ० आलोयावेत्ता० उद्दिसित्तए वा धारित्तए वा।१२॥ छट्ठो उद्देसओ ६॥ जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया, नो कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थे अणापुच्छित्ता निग्गन्थिं अन्नगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स अणालोयावित्ता० पायच्छित्तं० अपडिवज्जावेत्ता पुच्छित्तए वा वाएत्तए वा उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा[1]जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया, कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थे आपुच्छित्ता निग्गन्थिं अन्नगणाओ आगयं खुयायारं सबलायारं भिन्नायारं संकिलिट्ठायारचरित्तं तस्स ठाणस्स आलोयावेत्ता

९७५ व्यवहारःसूत्रं, उद्देशो, ७

मुनि दीपरत्नसागर

	अत्र उद्देशक: ७ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [२]

दीप अनुक्रम [१६१]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

पडिक्कमावेत्ता जाव उवट्ठावेत्तए वा संभुंजित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारित्तए वा । २। जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थीओ य आपुच्छित्ता निग्गन्थीं अण्णगणाओ आगयं खुयायारं जाव तस्स ठाणस्स आलोयावित्ता पडिक्कमावेत्ता जाव उवट्ठावित्तए वा संभुञ्जित्तए वा संव० तीसे इत्तरियं० धारेत्तए वा, तं च निग्गन्थीओ इच्छेज्जा सयमेव नियंठाणं जाव उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा ‘४४’ । ३। जे निग्गन्था य निग्गन्थीओ य संभोइया सिया, नो ण्हं कप्पइ पारोक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, कप्पइ ण्हं पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, जत्थेव ते अन्नमन्नं पासेज्जा तत्थेव एवं वएज्जा ‘अहं णं अज्जो ! तुमाए सद्धिं इमम्मि-य २ कारणम्मि पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोगं विसंभोगं करेमि’, से य पडितप्पेज्जा, एवं से नो कप्पइ पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, से य नो पडितप्पेज्जा एवं से कप्पइ पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए ‘८६’ । ४। जाओ निग्गन्थीओ वा निग्गन्था वा संभोइया सिया नो ण्हं कप्पइ निग्गन्थि पच्चक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, कप्पइ ण्हं पारोक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, जत्थेव ताओ अप्पणो आयरियउवज्झाए पासेज्जा तत्थेव एवं वएज्जा ‘अहं णं भंते! अमुगीए अज्जाए सद्धिं इमम्मि कारणम्मि पारोक्खं पाडिएक्कं संभोगं विसंभोगं करेमि’ सा य से पडितप्पेज्जा एवं से नो कप्पइ पारोक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए, सा य से नो पडितप्पेज्जा एवं से कप्पइ पारोक्खं पाडिएक्कं संभोइयं विसंभोगं करेत्तए ‘९४’ । ५। नो कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थि अप्पणो अट्ठाए पव्वावेत्तए वा मुण्डावेत्तए वा सिक्खावित्तए वा सेहावेत्तए वा उवट्ठावेत्तए वा संभुंजित्तए वा संवसित्तए वा तीसे इत्तरियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा । ६। कप्पइ निग्गन्थाणं निग्गन्थि अन्नेसिं अट्ठाए पव्वावेत्तए वा० धारेत्तए वा ‘११८’ ।७। नो कप्पइ निग्गन्थीणं निग्गन्थि अप्पणो अट्ठाए पव्वावेत्तए वा मुंडावेत्तए वा जाव धारित्तए वा ।८। कप्पइ निग्गंथीणं निग्गंथिं अट्ठाए पव्वावेत्तए वा जाव धारित्तए वा। ९। नो कप्पइ निग्गंथीणं विइकिट्ठियं दिसं वा अणुदिसं वा उद्दिसित्तए वा धारेत्तए वा। १०। कप्पइ निग्गंथाणं वि०धा० ‘१४४’।११। नो कप्पइ निग्गंथाणं विइकिट्ठाइं पाहुडाइं विओसवेत्तए। १२। कप्पइ निग्गंथीणं विइकिट्ठाइं पाहुडाइं विओसवेत्तए ‘१७९’।१३। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा विइकिट्ठयं कालं सज्झायं उद्दिसित्तए वा करेत्तए वा।१४। कप्पइ निग्गंथीणं विइकिट्ठए काले सज्झायं करेत्तए निग्गंथनिस्साए ‘२६४’। १५। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा असज्झाइए सज्झायं करेत्तए ।१६। कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सज्झाइए सज्झायं करेत्तए।१७। नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अप्पणो असज्झाइए सज्झायं करेत्तए, कप्पइ ण्हं अन्नमन्नस्स वायणं दलइत्तए ‘४०३’ । १८। तिवासपरियाए समणे निग्गंथे तीसवासपरियायाए समणीए निग्गंथीए कप्पइ उवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए ।१९। पञ्चवासपरियाए समणे निग्गंथे सट्ठिवासपरियायाए समणीए निग्गंथीए कप्पइ आयरियत्ताए उद्दिसित्तए ‘४१६’ । २०। गामाणुगामं दुइज्जमाणे भिक्खू अ आहच्च वीसुम्भेज्जा, तं च सरीरगं केइ साहम्मिया पासेज्जा, कप्पइ से तं सरीरगं मा सागारियंमित्तिकट्टु तं सरीरगं एगंते अचित्ते बहुफासुए थंडिले पडि० पम० परिट्ठवेत्तए, अत्थि वा इत्थ केइ साहम्मियसंतिए उवगरणजाए परिहरणारिहे कप्पइ णं से सागारकडं गहाय दोच्चंपि ओग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहारं परिहरेत्तए ‘४७२’ । २१। सागारिए उवस्सयं वक्कएणं पउञ्जेज्जा, से अ वक्कइयं वएज्जा ‘इमम्हि य इमम्हि य ओवासे समणा निग्गन्था परिवसंति?’, से सागारिए परिहारिए, से य नो वएज्जा, वक्कइए वएज्जा-इमम्मि य इमम्मि य ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, से सागारिए परिहारिए, दोवि ते वएज्जा-अयंसि २ ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, दोवि ते सागारिया परिहारिया । २२। सागारिए उवस्सयं विक्किणेज्जा, से य कइयं वएज्जा-इमम्हि य इमम्हि य ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्ति, से सागारिए पारिहारिए, से य नो एवं वएज्जा, कइए वएज्जा-अयंसि २ ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, से सागारिए पारिहारिए, दोवि ते वएज्जा-अयंसि २ ओवासे समणा निग्गन्था परिवसन्तु, दोवि सागारिया परिहारिया ।२३। विहवधूया नायकुलवासिणी सावियावि ओग्गहं अणुन्नवेयव्वा सिया किमङ्ग पुण तप्पिया वा भाया वा पुत्ते वा ?, से य दोवि ओग्गहं ओगेण्हियव्वा ।२४। पहिएवि ओग्गहं अणुन्नवेयव्वे ‘५१७’ ।२५। से रज्ज(राय)परियट्टेसु संथडेसु अव्वोगडेसु अवोच्छिन्नेसु अपरपरिग्गहिएसु भिक्खुभावस्स अट्ठाए सच्चेव ओग्गहस्स पुव्वाणुन्नवणा चिट्ठइ अहालन्दमवि ओग्गहे । २६। से य रज्जपरियट्टेसु असंथडेसु वोगडेसु वोच्छिन्नेसु परपरिग्गहिएसु भिक्खुभावस्स अट्ठाए दोच्चंपि ओग्गहे अणुन्नवेयव्वे सिया ‘५४५’ । २७॥ सत्तमो उद्देसओ ७ ॥ गाहा उदु पज्जोसविए, ताए गाहाए ताए पएसाए ताए उवासन्तराए जमिणं सेज्जासंथारगं लभेज्जा तमिणं ममेव सिया, थेरा य से अणुजाणेज्जा तस्सेव सिया, थेरा य से नो अणुजाणेज्जा एवं से कप्पइ आहाराइणियाए सेज्जासंथारगं पडिग्गाहेत्तए । १ । से य अहालहुसगं सेज्जासंथारगं गवेसेज्जा, जं चक्किया एगेणं हत्थेणं ओगिज्झिय जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा अद्धाणं परिवहित्तए, एस मे हेमन्तगिम्हासु भविस्सइ ।२। से अहालहुसगं सेज्जासंथारगं गवेसेज्जा, जं चक्किया एगेणं हत्थेणं ओगिज्झिय जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा अद्धाणं परिवहित्तए एस मे वासावासासु भविस्सइ (२४४)

९७६ व्यवहारःसूत्रं, उद्देसो-८ मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशक: ८ आरब्ध:

प्रत सूत्रांक [४] दीप अनुक्रम [१९०]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] "व्यवहार" मूलं

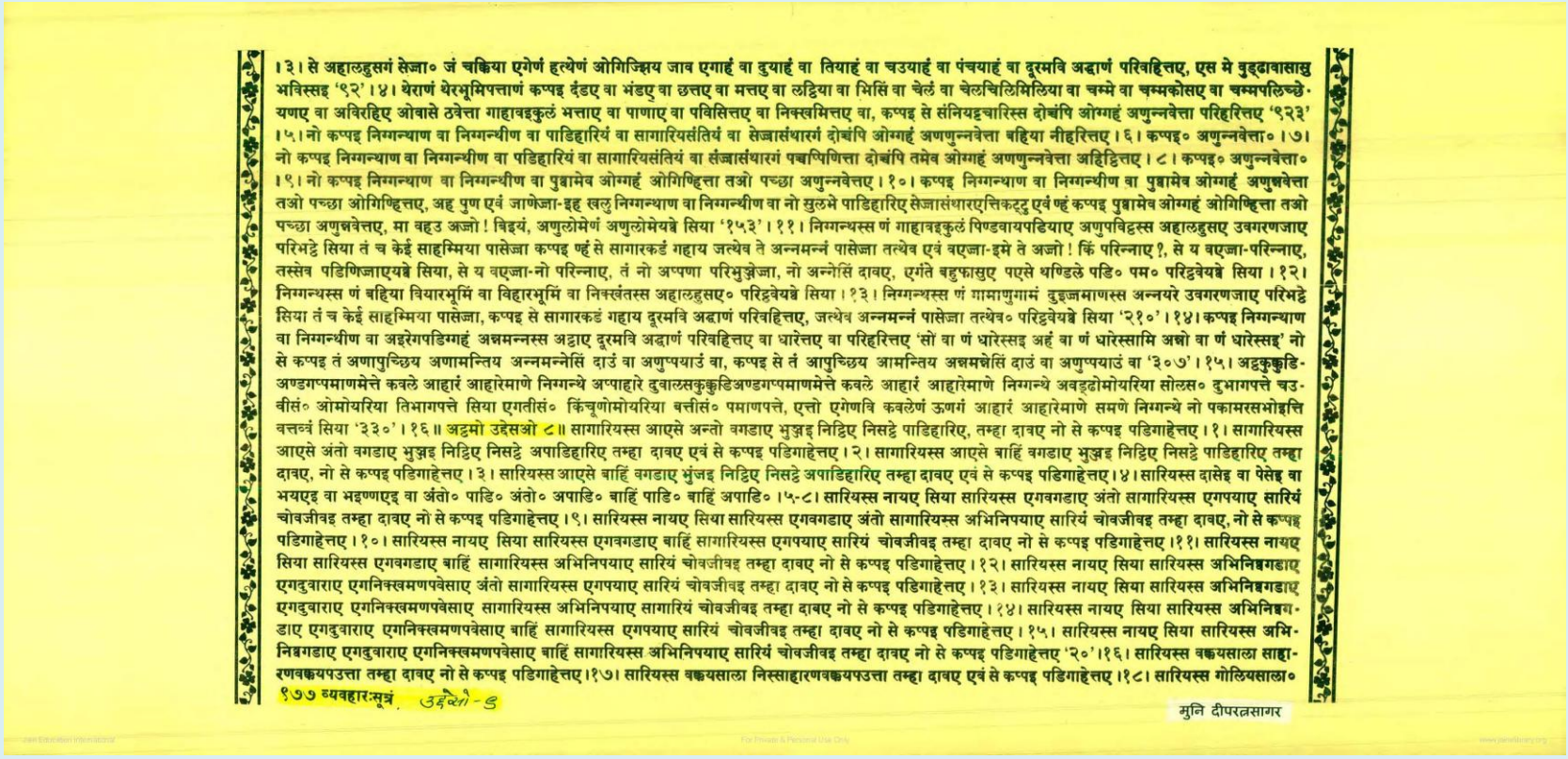

।३। से अहालहुसगं सेज्जा० जं चक्किया एगेणं हत्थेणं ओगिज्झिय जाव एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा चउयाहं वा पंचयाहं वा दूरमवि अद्धाणं परिवहित्तए, एस मे वुड्ढावासासु भविस्सइ '९२'।४। थेराणं थेरभूमिपत्ताणं कप्पइ दंडए वा भंडए वा छत्तए वा मत्तए वा लट्ठिया वा भिसिं वा चेलं वा चेलचिलिमिलिया वा चम्मे वा चम्मकोसए वा चम्मपलिच्छेयणए वा अविरहिए ओवासे ठवेत्ता गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा पविसित्तए वा निक्खमित्तए वा, कप्पइ से संनियट्टचारिस्स दोच्चंपि ओग्गहं अणुन्नवेत्ता परिहरित्तए '९२३' ।५। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारगं दोच्चंपि ओग्गहं अणणुन्नवेत्ता बहिया नीहरित्तए।६। कप्पइ० अणुन्नवेत्ता०।७। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पडिहारियं वा सागारियसंतियं वा संज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता दोच्चंपि तमेव ओग्गहं अणणुन्नवेत्ता अहिट्ठित्तए।८। कप्पइ० अणुन्नवेत्ता० ।९। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पुव्वामेव ओग्गहं ओगिण्हित्ता तओ पच्छा अणुन्नवेत्तए।१०। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा पुव्वामेव ओग्गहं अणुन्नवेत्ता तओ पच्छा ओगिण्हित्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा-इह खलु निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा नो सुलभे पाडिहारिए सेज्जासंथारएत्तिकट्टु एवं ण्हं कप्पइ पुव्वामेव ओग्गहं ओगिण्हित्ता तओ पच्छा अणुन्नवेत्तए, मा वहउ अज्जो! बिइयं, अणुलोमेणं अणुलोमेयव्वे सिया '१५३'।११। निग्गन्थस्स णं गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुपविट्ठस्स अहालहुसए उवगरणजाए परिभट्ठे सिया तं च केई साहम्मिया पासेज्जा कप्पइ ण्हं से सागारकडं गहाय जत्थेव ते अन्नमन्नं पासेज्जा तत्थेव एवं वएज्जा-इमे ते अज्जो! किं परिन्नाए?, से य वएज्जा-परिन्नाए, तस्सेव पडिणिज्जाएयव्वे सिया, से य वएज्जा-नो परिन्नाए, तं नो अप्पणा परिभुञ्जेज्जा, नो अन्नेसिं दावए, एगंते बहुफासुए पएसे थण्डिले पडि० पम० परिट्ठवेयव्वे सिया।१२। निग्गन्थस्स णं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंतस्स अहालहुसए० परिट्ठवेयव्वे सिया।१३। निग्गन्थस्स णं गामाणुगामं दुइज्जमाणस्स अन्नयरे उवगरणजाए परिभट्ठे सिया तं च केई साहम्मिया पासेज्जा, कप्पइ से सागारकडं गहाय दूरमवि अद्धाणं परिवहित्तए, जत्थेव अन्नमन्नं पासेज्जा तत्थेव० परिट्ठवेयव्वे सिया '२१०'।१४। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा अइरेगपडिग्गहं अन्नमन्नस्स अट्ठाए दूरमवि अद्धाणं परिवहित्तए वा धारेत्तए वा परिहरित्तए 'सो वा णं धारेस्सइ अहं वा णं धारेस्सामि अन्नो वा णं धारेस्सइ' नो से कप्पइ तं अणापुच्छिय अणामन्तिय अन्नमन्नेसिं दाउं वा अणुप्पयाउं वा, कप्पइ से तं आपुच्छिय आमन्तिय अन्नमन्नेसिं दाउं वा अणुप्पयाउं वा '३०७'।१५। अट्ठकुक्कुडिअण्डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे निग्गन्थे अप्पाहारे दुवालसकुक्कुडिअण्डगप्पमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे निग्गन्थे अवड्ढोमोयरिया सोलस० दुभागपत्ते चउवीसं० ओमोयरिया तिभागपत्ते सिया एगतीसं० किंचूणोमोयरिया बत्तीसं० पमाणपत्ते, एत्तो एगेणवि कवलेणं ऊणगं आहारं आहारेमाणे समणे निग्गन्थे नो पकामरसभोइत्ति वत्तव्वं सिया '३३०'।१६॥ अट्ठमो उद्देसओ ८॥ सागारियस्स आएसे अन्तो वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसट्ठे पाडिहारिए, तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१। सागारियस्स आएसे अंतो वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसट्ठे अपाडिहारिए तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए।२। सागारियस्स आएसे बाहिं वगडाए भुञ्जइ निट्ठिए निसट्ठे पाडिहारिए तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।३। सारियस्स आएसे बाहिं वगडाए भुंजइ निट्ठिए निसट्ठे अपाडिहारिए तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए।४। सारियस्स दासेइ वा पेसेइ वा भयएइ वा भइण्णएइ वा अंतो० पाडि० अंतो० अपाडि० बाहिं पाडि० बाहिं अपाडि०।५-८। सारियस्स नायए सिया सारियस्स एगवगडाए अंतो सागारियस्स एगपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।९। सारियस्स नायए सिया सारियस्स एगवगडाए अंतो सागारियस्स अभिनिपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१०। सारियस्स नायए सिया सारियस्स एगवगडाए बाहिं सागारियस्स एगपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।११। सारियस्स नायए सिया सारियस्स एगवगडाए बाहिं सागारियस्स अभिनिपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१२। सारियस्स नायए सिया सारियस्स अभिनिव्वगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए अंतो सागारियस्स एगपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१३। सारियस्स नायए सिया सारियस्स अभिनिव्वगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए सागारियस्स अभिनिपयाए सागारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१४। सारियस्स नायए सिया सारियस्स अभिनिव्वगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए बाहिं सागारियस्स एगपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१५। सारियस्स नायए सिया सारियस्स अभिनिव्वगडाए एगदुवाराए एगनिक्खमणपवेसाए बाहिं सागारियस्स अभिनिपयाए सारियं चोवजीवइ तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए '२०'।१६। सारियस्स वक्कयसाला साहारणवक्कयपउत्ता तम्हा दावए नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१७। सारियस्स वक्कयसाला निस्साहारणवक्कयपउत्ता तम्हा दावए एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१८। सारियस्स गोलियसाला०

१७७ व्यवहारःसूत्रं, उद्देशो-९

मुनि दीपरत्नसागर

For Private & Personal Use Only

अत्र उद्देशकः ९ आरब्धः

प्रत सूत्रांक [३०]

दीप अनुक्रम [२३२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

बोधियसाला॰ दोसियसाला॰ सोत्तियसाला॰ बोडियसाला॰ गन्धियसाला॰ एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए।१९-३०। सागारियस्स सोंडियसाला॰।३१-३२। सारियस्स ओसहीओ संथडाओ, तम्हा दावए, नो से कप्पइ पडिगाहेत्तए।३३। सारियस्स ओसहीओ असंथडाओ, तम्हा दावए, एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए।३४। सारियस्स अम्बफला॰ एवं से कप्पइ पडिगाहेत्तए॰ '७४'।३५-३६। सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगूणपन्नाए राइंदिएहिं एगेणं छन्नउएणं भिक्खासएणं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातचं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए अणुपालिया भवइ।३७। अट्ठअट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा णं चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं॰ अणुपालिया भवइ।३८। नवनवमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगासीएहिं राइंदिएहिं चउहि य पञ्चुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव अणुपालिया भवइ।३९। दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगेणं राइंदियसएणं अद्धछट्ठेहि य भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव भवइ '८५'।४०। दो पडिमाओ पं॰ तं॰-खुड्डिया चेव मोयपडिमा महल्लिया चेव मोयपडिमा, खुड्डियण्णं मोयपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पइ से पढमसरयकालसमयंसि वा चरिमनिदाहकालसमयंसि वा, बहिया ठाइयबा गामस्स वा जाव संनिवेसस्स वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा पव्वयंसि वा पव्वयविदुग्गंसि वा, भोच्चा आरुभइ चोद्दसमेणं पारेइ अभोच्चा आरुभइ सोलसमेणं पारेइ, जाए जाए मोए दिया आगच्छइ दिया चेव आइयव्वे, राइं आगच्छइ नो आइयव्वे, सपाणे मत्ते आगच्छइ नो आइयव्वे, अपाणे मत्ते आगच्छइ आइयव्वे, एवं सबीए ससिणिद्धे ससरक्खे मत्ते आगच्छइ नो आइयव्वे, अबीए असिणिद्धे अस-रक्खे मत्ते आगच्छइ आइयव्वे, जाए जाए मोए आइयव्वे तं अप्पं वा बहुए वा, एवं खलु सा खुड्डिया मोयपडिमा अहासुत्तं जाव अणुपालिया भवइ।४१। महल्लियण्णं मोयपडिमं॰ पढमसर॰ जाव पव्वयविदुग्गंसि वा, भोच्चा आरुभइ सोलसमेणं पारेइ, अभोच्चा आरुभइ अट्ठारसमेणं पारेइ, जाए जाए मोए॰ आइयव्वे॰ आणाए अणुपालिया भवइ।४२। संखादत्तियस्स णं भिक्खुस्स पडिग्गहधारिस्स गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठस्स जावतियं २ अन्तो पडिग्गहंसि उवइत्तु दलएज्जा तावइयाओ दत्तीओ वत्तव्वं सिया, तत्थ से केइ छप्पएण वा दूसएण वा वालएण वा अन्तो पडिग्गहंसि उचित्ता दलएज्जा सव्वावि णं सा एगा दत्ती वत्तव्वं सिया, तत्थ से बहवे भुञ्जमाणा सव्वे ते सयं सयं पिण्डं साहणिय २ अन्तो पडिग्गहंसि उचित्ता दलएज्जा सव्वावि णं सा एगा दत्तीति वत्तव्वं सिया।४३। संखादत्तियस्स णं भिक्खुस्स पाणिपडिग्गहियस्स॰ जावइयं अन्तो पाणिंसि पडिग्गहंसि॰ वत्तव्वं सिया '११५'।४४। तिविहे उवहडे पं॰ तं॰-सुद्धोवहडे फालिओवहडे संसट्ठोवहडे।४५। तिविहे ओग्गहिए पं॰ तं॰-जं च ओगिण्हइ जं च साहरइ जं च आसगंसि पक्खिवइ, एगे एवमाहंसु, एगे पुण एवमाहंसु-दुविहे ओग्गहिए पं॰ तं॰-जं च ओगिण्हइ जं च आसगंसि पक्खिवइ '१२८'।४६॥ नवमो उद्देसओ ९॥ दो पडिमाओ पं॰ तं॰-जवमज्झा य चन्दपडिमा वइरमज्झा य चन्दपडिमा, जवमज्झण्णं चन्दपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स मासं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केई उवसग्गा समुप्पज्जंति तं॰-दिव्वा वा माणुस्सगा वा तिरिक्खजोणिया वा अणुलोमा वा पडिलोमा वा, तत्थाणुलोमा ताव वंदेज्ज वा नमंसेज्ज वा सक्कारेज्ज वा सम्माणेज्ज वा कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्ज वा, तत्थ पडिलोमा अन्नयरेणं दंडेण वा अट्ठिणा वा जोत्तेण वा वेत्तेण वा कसेण वा काए आउडेज्जा वा ते सव्वे उप्पन्ने सम्मं सहेज्जा खमेज्जा तितिक्खेज्जा अहियासेज्जा, जवमज्झण्णं चंदपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स सुक्कपक्खस्स पाडिवए कप्पइ एगा दत्ती भोयणस्स पडिगाहेत्तए एगा पाणस्स, सव्वेहिं दुप्पयचउप्पयाइएहिं आहारकंखीहिं सत्तेहिं पडिणियत्तेहिं अन्नायउञ्छं सुद्धोवहडं, कप्पइ से एगस्स भुञ्जमाणस्स पडिगाहेत्तए, नो दोण्हं नो तिण्हं नो चउण्हं नो पञ्चण्हं नो गुव्विणीए नो बालवच्छाए नो दारगं पेज्जमाणीए, नो से कप्पइ अंतो एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए पडिगाहित्तए, नो॰ बाहिं एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए पडिगाहेत्तए, अह पुण एवं जाणेज्जा-एगं पायं अंतो किच्चा एगं पायं बाहिं किच्चा एलुयं विक्खम्भइत्ता, एयाए एसणाए एसमाणे लभेज्जा आहारेज्जा, एयाए एसणाए एसमाणे नो लभेज्जा णो आहारेज्जा, बिइयाए से कप्पइ दोण्णि दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए दोण्णि पाणस्स, कप्पइ जाव नो आहारेज्जा, एवं तइयाए तिण्णि जाव पन्नरसीए पन्नरस, बहुलपक्खस्स पाडिवए कप्पंति चोद्दस जाव चोद्दसीए एक्का दत्ती भोयणस्स एक्का पाणगस्स सव्वेहिं दुपयचउप्पय जाव नो आहारेज्जा, अमावासाए से य अभत्तट्ठे भवइ, एवं खलु एसा जवमज्झचंदपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं जाव अणुपालिया भवति।१। वइरमज्झं णं चंदपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स मासं॰ अहियासेज्जा, वइरमज्झं चंदपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स बहुलपक्खस्स पाडिवए कप्पइ पण्णरस दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्तए पण्णरस पाणगस्स सव्वेहिं दुपयचउप्पय॰, बीयाए से कप्पइ चोद्दस, एवं पन्नरसीए एगा दत्ती, पडिवए से कप्पइ दो दत्तीओ बीयाए तिन्नि जाव चउद्दसीए पण्णरस पुण्णिमाए अभत्तट्ठे भवइ, एवं खलु एसा वइरमज्झचंदपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं जाव अणुपालिया भवइ '५०'।२। पंचविहे ववहारे पं॰ तं॰-आगमे सुए आणा धारणा जीए, तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारे पट्ठवियव्वे नो

१७८ व्यवहारःसूत्रं, उद्देशो - १०

मुनि दीपरत्नसागर

अत्र उद्देशक: १० आरब्धः

प्रत सूत्रांक [३]

दीप अनुक्रम [२५१]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [३६], छेदसूत्र - [३] “व्यवहार” मूलं

से तत्थ आगमे सिया सुएणं ववहारे पट्ठवियव्वे सिया, नो से तत्थ सुए सिया जहा से तत्थ आणा सिया आणाए ववहारे पट्ठवेयव्वे सिया, नो से तत्थ आणा सिया जहा से तत्थ धारणा सिया धारणाए ववहारे पट्ठवेयव्वे सिया, णो से तत्थ धारणा सिया जहा से तत्थ जीए सिया जीएणं ववहारे पट्ठवेयव्वे सिया, एएहिं पंचहिं ववहारेहिं ववहारं पट्ठवेज्जा, तंजहा-आगमेणं सुएणं आणाए धारणाए जीएणं, जहा २ आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा २ ववहारं पट्ठविज्जा, से किमाहु भन्ते!?, आगमबलिया समणा निग्गन्था, इच्चेइयं पंचविहं ववहारं जया २ जहिं २ जहा २ तहिं २ अणिस्सिओवस्सियं ववहारं ववहरमाणे समणे निग्गन्थे आणाए आराहए भवति '७१५'।३। चत्तारि पुरिसज्जाया पं० तं०-अट्ठकरे नामं एगे नो माणकरे माणकरे नामं एगे नो अट्ठकरे एगे अट्ठकरेवि माणकरेवि एगे नो अट्ठकरे नो माणकरे '७२९'।४। चत्तारि पुरिसज्जाया पं० तं०-गणट्ठकरे नामं एगे नो माणकरे माणकरे नामं एगे नो गणट्ठकरे एगे गणट्ठकरेवि माणकरेवि एगे नो गणट्ठकरे नो माणकरे '७३३'।५। चत्तारि पुरिसज्जाया पं० तं०-गणसंगहकरे नामं एगे नो माणकरे माणकरे नामं एगे नो गणसंगहकरे एगे गणसंगहकरेवि माणकरेवि एगे नो गणसंगहकरे नो माणकरे '७३५'।६। चत्तारि पुरिसज्जाया पं० तं०-गणसोहकरे नामं एगे नो माणकरे माणकरे नामं एगे नो गणसोहकरे एगे गणसोहकरेवि माणकरेवि एगे नो गणसोहकरे नो माणकरे।७। चत्तारि पुरिसज्जाया पं० तं०-गणसोहिकरे नामं एगे नो माणकरे माणकरे नामं एगे नो गणसोहिकरे एगे गणसोहिकरेवि माणकरेवि एगे नो गणसोहिकरे नो माणकरे '७३९'।८। चत्तारि पुरिसज्जाया पं० तं०-रूवं नामेगे जहइ नो धम्मं धम्मं नामेगे जहइ नो रूवं एगे रूवंपि जहइ धम्मंपि जहइ एगे नो रूवं जहइ नो धम्मं जहइ '७४३'।९। चत्तारि पुरिसज्जाया पं० तं०-धम्मं नामेगे जहइ नो गणसंठिइं गणसंठिइं नामेगे जहइ नो धम्मं एगे गणसंठइंपि जहइ धम्मंपि जहइ एगे नो गणसंठिइं जहइ नो धम्मं जहइ '७४७'।१०। चत्तारि पुरिसज्जाया पं० तं०-पियधम्मे नामेगे नो दढधम्मे दढधम्मे नामेगे नो पियधम्मे एगे पियधम्मेवि दढधम्मेवि एगे नो पियधम्मे नो दढधम्मे '७५१'।११। चत्तारि आयरिया पं० तं०-पव्वावणायरिए नामेगे नो उवट्ठावणायरिए उवट्ठावणायरिए नामेगे नो पव्वावणायरिए एगे पव्वावणायरिएवि उवट्ठावणायरिएवि एगे नो पव्वावणायरिए नो उवट्ठावणायरिए, धम्मायरिए '७५६'।१२। चत्तारि आयरिया पं० तं०-उद्देसणायरिए नामेगे णो वायणायरिए वायणायरिए नामेगे नो उद्देसणायरिए एगे उद्देसणायरिएवि वायणायरिएवि एगे नो उद्देसणायरिए नो वायणायरिए, धम्मायरिए '७५७'।१३। चत्तारि अंतेवासी पं० तं०-पव्वावणअंतेवासी णामेगे णो उवट्ठावणअंतेवासी उवट्ठावणांतेवासी णामेगे णो पव्वावणअंतेवासी एगे पव्वा० उवट्ठा० एगे नो पव्वा० नो उव०, धम्मअंतेवासी।१४। चत्तारि अंतेवासी पं० तं०-उद्देसणन्तेवासी नामेगे नो वायणन्तेवासी वायणन्तेवासी नामेगे नो उद्देसणन्तेवासी एगे उद्देसणन्तेवासीवि वायणन्तेवासीवि एगे नो उद्देसणन्तेवासी नो वायणन्तेवासी, धम्मन्तेवासी '७५९'।१५। तओ थेरभूमीओ पं० तं०-जाइथेरे सुयथेरे परियायथेरे, सट्ठिवासजायए समणे निग्गन्थे जाइथेरे ठाणसमवायधरे समणे निग्गन्थे सुयथेरे वीसवासपरियाए समणे निग्गन्थे परियायथेरे '७६४'।१६। तओ सेहभूमीओ पं० तं०-सत्तराइंदिया चाउम्मासिया छम्मासिया, छम्मासिया उक्कोसिया चाउम्मासिया मज्झिमिया सत्तराइन्दिया जहन्निया '८०७'।१७। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगं वा खुड्डियं वा ऊणट्ठवासजायं उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा।१८। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगं वा खुड्डियं वा साइरेगट्ठवासजायं उवट्ठावेत्तए वा संभुञ्जित्तए वा '८१४'।१९। नो कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा अवञ्जणजायस्स आयारपकप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।२०। कप्पइ निग्गन्थाण वा निग्गन्थीण वा खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा वञ्जणजायस्स आयारपकप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए '८१७'।२१। तिवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ आयारपकप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।२२। चउवासपरियागस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ सूयगडे नामं अङ्गे उद्दिसित्तए।२३। पञ्चवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स कप्पइ दसाकप्पववहारा णामं अज्झयणं उद्दिसित्तए।२४। अट्ठवासपरियायस्स समणस्स निग्गन्थस्स ठाणसमवाए नामं अङ्गे उद्दिसित्तए।२५। दसवासपरिया० कप्पइ वियाहे नामं अङ्गे उद्दिसित्तए।२६। एक्कारसवासपरिया० कप्पइ खुड्डिया विमाणपविभत्ती महल्लियविमाणपविभती अङ्गचूलिया वग्ग(ङ्ग)चूलिया वियाहचूलिया नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।२७। बारसवासपरिया० कप्पइ अरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।२८। तेरसवासपरिया० कप्पइ उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए देविंदोववाए नागपरियावणि(लि)या नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।२९। चोद्दसवासपरिया० कप्पइ सुमिणभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।३०। पन्नरसवासपरिया० कप्पइ चारणभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।३१। सोलसवासपरिया० कप्पइ तेयनिसग्गं०।३२। सत्तरसवासपरिया० आसीविसभावणा नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए।३३। अट्ठारसवासपरिया० कप्पइ दिट्ठीविसभावणा नामं अज्झयणे०।३४। एगूणवीसइवासपरिया० कप्पइ दिट्ठिवाए नामं अङ्गे उद्दिसित्तए।३५। वीसवासपरियाए समणे

९७९ व्यवहारःसूत्रं, ३६उ-१०

मुनि दीपरत्नसागर

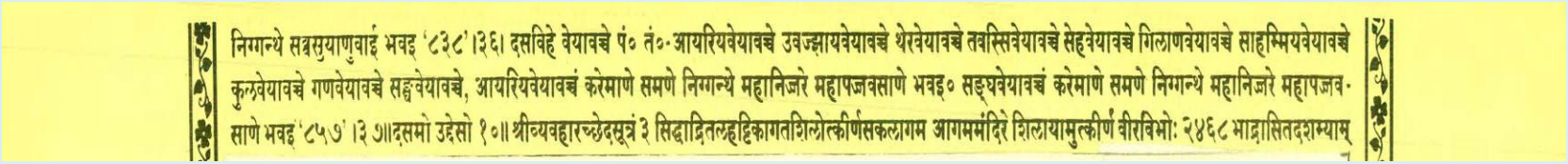

प्रत
सूत्रांक
[३६]

दीप
अनुक्रम
[२८४]

निग्गन्थे सव्वसुयाणुवाई भवइ '८३८'।३६। दसविहे वेयावच्चे पं० तं०-आयरियवेयावच्चे उवज्झायवेयावच्चे थेरवेयावच्चे तवस्सिवेयावच्चे सेहवेयावच्चे गिलाणवेयावच्चे साहम्मियवेयावच्चे कुलवेयावच्चे गणवेयावच्चे सङ्घवेयावच्चे, आयरियवेयावच्चं करेमाणे समणे निग्गन्थे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ० सङ्घवेयावच्चं करेमाणे समणे निग्गन्थे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ '८५७' ।३७॥ दसमो उद्देसो १०॥ श्रीव्यवहारच्छेदसूत्रं ३ सिद्धाद्रितलहट्टिकागतशिलोत्कीर्णसकलागम आगममंदिरे शिलायामुत्कीर्णं वीरविभोः २४६८ भाद्रासितदशम्याम्

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित: (आगमसूत्र ३६)

“व्यवहार” परिसमाप्त:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

36

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

“व्यवहार-छेदसूत्र” [मूलं एव]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

“व्यवहार” मूलं” नामेण

परिसमाप्त:

Remember it’s a Net Publications of ‘jain_e_library’s’